

लेखक  
पास्टर मोजेश

# मनुष्य का घातक शत्रु

अदृश्य शक्तियों की सच्चाई



# मनुष्य का घातक शत्रु

(अदृश्य शक्तियों की सच्चाई)

लेखक

पास्टर मोजेश

**Divine Power Path**

प्रकाशन वर्ष

2025

# प्रस्तावना

प्रिय पाठक,

मैं Pastor Mojesh, Divine Power Path से, आपको इस पुस्तक के माध्यम से आत्मिक ज्ञान और विजय का मार्ग प्रदान करने के लिए हार्दिक स्वागत करता हूँ।

हम सभी जीवन में कठिनाइयों, शत्रुओं और आंतरिक कमजोरियों से जूझते हैं। कभी-कभी हमें लगता है कि समस्या केवल बाहरी परिस्थितियों में है, लेकिन वास्तविक लड़ाई अक्सर हमारे भीतर, हमारे विचारों, इच्छाओं और कमजोरियों में होती है। यही कारण है कि परमेश्वर हमें चेतावनी देते हैं: “अपने शत्रु को जानो”।

इस पुस्तक में, मैंने बाइबल के उदाहरणों – जैसे पौलुस, मूसा, दाऊद, जेम्स और जॉन, और सैमसन – के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि:

1. आंतरिक शत्रु हमारी सबसे बड़ी चुनौती है।
2. बाहरी शत्रु केवल तभी प्रभाव डाल सकते हैं, जब हम अंदर से कमजोर हों।
3. यीशु का नाम और परमेश्वर की छाया ही हमें हर संकट और शत्रु से सुरक्षित रखते हैं।
4. विजय का मार्ग पहचान + प्रार्थना + विश्वास से होकर जाता है।

मैं प्रार्थना करता हूँ कि यह पुस्तक आपके आत्मिक जीवन में प्रकाश और शक्ति का स्रोत बने। इसे पढ़कर आप न केवल अपने आंतरिक और बाहरी शत्रु को पहचानेंगे, बल्कि यीशु मसीह के नाम और परमेश्वर की छाया में स्थायी विजय भी पाएँगे।

आइए, इस यात्रा की शुरुआत करें और परमेश्वर के राज्य में स्थायी विजयी बनें।

– Pastor Mojesh

Divine Power Path

Copyright © 2025 Mojesh

All rights reserved.

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means—electronic, mechanical, photocopying, recording, or otherwise—without the prior written permission of the author, except for brief quotations used in reviews, articles, or educational purposes.

For permission requests, contact:

Divine Power Path

Email: [divinepowerpath@gmail.com](mailto:divinepowerpath@gmail.com)

Website: [www.divinepowerpath.com](http://www.divinepowerpath.com)

Published in India

First Edition

## अध्याय 1 \_\_\_\_\_ 8

मनुष्य का घातक शत्रु \_\_\_\_\_ 8

1. शैतान की पहचान: चालाक शत्रु \_\_\_\_\_ 8

2. पहला हमला: परमेश्वर के वचन पर सवाल \_\_\_\_\_ 9

3. अधूरा उत्तर: वचन में जोड़-घटाव \_\_\_\_\_ 10

4. खुला झूठ: परमेश्वर के वचन का खंडन \_\_\_\_\_ 11

5. लालच का जाल: परमेश्वर जैसा बनने का प्रस्ताव \_\_\_\_\_ 11

6. पतन की प्रक्रिया: देखना, चाहना, गिरना \_\_\_\_\_ 12

मुख्य संदेश \_\_\_\_\_ 13

आत्मिक शिक्षा \_\_\_\_\_ 13

## अध्याय 2 \_\_\_\_\_ 15

शैतान की लुभाने की चाल \_\_\_\_\_ 15

1. फल की वास्तविकता: समस्या फल में नहीं थी \_\_\_\_\_ 16

2. झूठा मानसिक चित्र: शैतान की पहली चाल \_\_\_\_\_ 16

3. परमेश्वर की भलाई से असंतोष \_\_\_\_\_ 17

4. आज का मनुष्य और वही पुरानी चाल \_\_\_\_\_ 18

5. विवाह का उदाहरण: पराई स्त्री का भ्रम \_\_\_\_\_ 19

6. शैतान का पुराना झूठ: “दूसरा विकल्प बेहतर होगा” \_\_\_\_\_ 19

7. असली समस्या: संतोष की कमी \_\_\_\_\_ 20

मुख्य संदेश \_\_\_\_\_ 21

आत्मिक शिक्षा \_\_\_\_\_ 21

शैतान का झूठ: “दूसरी शादी से खुशी मिलेगी” \_\_\_\_\_ 22

1. शैतान का बड़ा झूठ \_\_\_\_\_ 22

2. इतिहास की पहली गलती: लामेक	23
3. लामेक का विलाप: अंदर की टूटन	24
4. गलत समाधान, सही समस्या का इलाज नहीं	25
5. असली समस्या क्या थी?	25
6. आत्म-परीक्षण	26
7. आशा और प्रार्थना	28
मुख्य संदेश	29
<b>अध्याय 3</b>	<b>30</b>
मनुष्य का दूसरा घातक शत्रु — शरीर (Flesh)	30
1. शरीर की वास्तविक स्थिति: उसमें भलाई नहीं रहती	31
2. चाहना और करना: दो अलग दिशाएँ	31
3. समस्या की जड़: भीतर रहने वाला पाप	32
4. एक नियम जैसा अनुभव	33
5. भीतर आनंद, बाहर युद्ध	33
6. कैद जैसा अनुभव	34
7. हताश नहीं, ईमानदार पुकार	35
8. एकमात्र समाधान: यीशु मसीह	36
9. शरीर आत्मा पर कैसे हमला करता है	37
10. शरीर के काम (सरल समझ)	37
11. गंभीर चेतावनी	38
मुख्य संदेश	38
प्रार्थना	39
<b>अध्याय 4</b>	<b>41</b>

शरीर के काम क्यों घातक हैं?	41
1. शरीर के काम सबसे खतरनाक क्यों हैं	42
2. यीशु की चेतावनी: असली भय किसका हो	42
3. शरीर और उसके काम: एक धीमा ज़हर	43
4. नीति-वचन का उदाहरण: आग पर चलना	44
5. पराई स्त्री का उदाहरण: आत्मा का नाश	45
6. शरीर के कामों का एकमात्र समाधान	46
7. यीशु और प्रार्थना का मार्ग	47
8. विधवा और न्यायी: आत्मिक संघर्ष का चित्र	48
मुख्य संदेश	49
प्रार्थना	49
<b>अध्याय 5</b>	<b>51</b>
शिष्यत्व का स्कूल	51
<b>अध्याय 6</b>	<b>59</b>
शत्रु की पहचान और प्रार्थना का महत्व	59
<b>अध्याय 7</b>	<b>64</b>
आंतरिक शत्रु – पौलुस और मूसा के उदाहरण	64
<b>अध्याय 8</b>	<b>69</b>
आंतरिक शत्रु और आत्मिक जीवन	69
<b>अध्याय 9</b>	<b>74</b>
परम उच्च और उसका संरक्षण	74
<b>अध्याय 10</b>	<b>78</b>
यीशु का नाम और सर्वशक्तिमान परमेश्वर	78



# अध्याय 1

## मनुष्य का घातक शत्रु

उत्पत्ति 3:1-5 पर आधारित

### भूमिका

मनुष्य का पतन किसी अचानक दुर्घटना का परिणाम नहीं था, बल्कि एक सूक्ष्म, चालाक और योजनाबद्ध आत्मिक आक्रमण का फल था। शैतान ने न तो ज़ोर-जबरदस्ती की, न ही किसी हथियार का प्रयोग किया। उसने केवल विचार बदले, और विचार बदलते ही जीवन की दिशा बदल गई।

उत्पत्ति 3:1-5 हमें यह दिखाता है कि शैतान कैसे काम करता है—तब भी और आज भी।

## 1. शैतान की पहचान: चालाक शत्रु

बाइबल कहती है:

“अब साँप मैदान के सब पशुओं से अधिक चालाक था...”

(उत्पत्ति 3:1)

यहाँ साँप केवल एक पशु नहीं, बल्कि शैतान का माध्यम है। उसकी पहचान उसकी शक्ति से नहीं, बल्कि उसकी चालाकी से होती है।

शैतान कभी भी सीधे आकर यह नहीं कहता, “मैं तुम्हें गिराना चाहता हूँ।” वह मित्र की तरह, सलाहकार की तरह, और कभी-कभी बहुत धार्मिक भाषा में आता है।

वह सोच को बदलता है, ताकि निर्णय अपने आप बदल जाए।

आत्मिक सच्चाई:

शैतान का सबसे खतरनाक रूप उसका “निर्दोष दिखना” है।

## 2. पहला हमला: परमेश्वर के वचन पर सवाल

साँप ने स्त्री से पूछा:

“क्या परमेश्वर ने सच कहा है कि तुम बगीचे के किसी भी पेड़ का फल न खाना?”

ध्यान दें—

यह सीधा झूठ नहीं था, बल्कि एक सवाल था।

शैतान का पहला हथियार हमेशा यही होता है:

“क्या सच में परमेश्वर ने ऐसा कहा है?”

वह वचन को नकारता नहीं,

पहले उस पर संदेह पैदा करता है।

आत्मिक सच्चाई:

जहाँ वचन पर संदेह शुरू होता है, वहीं पतन की यात्रा शुरू हो जाती है।

### 3. अधूरा उत्तर: वचन में जोड़-घटाव

स्त्री ने उत्तर दिया:

“हम बगीचे के पेड़ों का फल खा सकते हैं...

पर जो पेड़ बीच में है, उसका फल न खाना, न छूना, नहीं तो मर जाओगे।”

यहाँ एक महत्वपूर्ण बात दिखाई देती है।

परमेश्वर ने कहा था—

“न खाना”

लेकिन स्त्री ने कहा—

“न छूना भी।”

यह छोटा सा बदलाव दिखाता है कि स्त्री को वचन याद तो था,

लेकिन पूरी सटीकता के साथ नहीं।

आत्मिक सच्चाई:

वचन में थोड़ा सा जोड़ या घटाव भी हमें आत्मिक रूप से कमजोर बना देता है।

## 4. खुला झूठ: परमेश्वर के वचन का खंडन

अब शैतान अगला कदम उठाता है:

“तुम निश्चय नहीं मरोगे।”

अब कोई सवाल नहीं,  
कोई घुमाव नहीं—  
यह सीधा झूठ है।

शैतान ने साफ कहा कि परमेश्वर का वचन गलत है।

उसकी रणनीति स्पष्ट है:

पहले संदेह → फिर भ्रम → फिर खुला झूठ।

आत्मिक सच्चाई:

जो शैतान पहले धीरे बोलता है, वही अंत में ज़ोर से झूठ बोलता है।

## 5. लालच का जाल: परमेश्वर जैसा बनने का प्रस्ताव

शैतान ने कहा:

“तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी, और तुम परमेश्वर के समान हो जाओगे।”

यहाँ शैतान ने सबसे खतरनाक हथियार चलाया—  
घमंड और लालच।

उसने यह संकेत दिया कि  
परमेश्वर कुछ अच्छा छिपा रहा है।  
मानो परमेश्वर मनुष्य की भलाई नहीं चाहता।

उसने स्वतंत्रता को परमेश्वर से अलग होकर पाने का सपना दिखाया।

आत्मिक सच्चाई:  
शैतान पाप को हमेशा “लाभ” की तरह पेश करता है।

## 6. पतन की प्रक्रिया: देखना, चाहना, गिरना

बाइबल आगे कहती है:

“जब स्त्री ने देखा कि वह पेड़ खाने में अच्छा है...”

यह एक प्रक्रिया थी:

1. देखा – आँखों से आकर्षण
2. चाहा – मन में इच्छा
3. किया – हाथों से कार्य

पाप कभी अचानक नहीं होता।  
वह पहले मन में जन्म लेता है,  
फिर जीवन में प्रकट होता है।

आत्मिक सच्चाई:

जो चीज़ आँखों में सुंदर लगती है, वह आत्मा के लिए घातक हो सकती है।

## मुख्य संदेश

शैतान मनुष्य का घातक शत्रु है क्योंकि वह—

- परमेश्वर के वचन पर संदेह लाता है
- सत्य को तोड़-मरोड़ कर पेश करता है
- झूठ और लालच से मन को फँसाता है
- और अंत में आत्मिक मृत्यु की ओर ले जाता है

उसका सबसे पुराना हथियार है—

लुभाना (Enticement)।

# आत्मिक शिक्षा

- परमेश्वर के वचन को पूरा, सही और गहराई से जानिए
- हर मीठी आवाज़ सत्य नहीं होती
- हर आकर्षक चीज़ लाभदायक नहीं होती
- वचन ही हमारा सबसे बड़ा आत्मिक कवच है

## निष्कर्ष

उत्पत्ति 3 केवल अतीत की कहानी नहीं है—

यह आज के मनुष्य की भी कहानी है।

जो शैतान ने अदन की वाटिका में किया,

वही वह आज भी हमारे मन, परिवार, सेवकाई और विश्वास के साथ करना चाहता है।

पर जो मनुष्य वचन में स्थिर रहता है,

वह हर चालाकी पर विजय पा सकता है।

# अध्याय 2

## शैतान की लुभाने की चाल

### भूमिका

शैतान कभी भी किसी चीज़ को जबरदस्ती नहीं छीनता।

वह मनुष्य को स्वेच्छा से गलत चुनने के लिए तैयार करता है।

उसका तरीका सीधा नहीं होता—वह सोच, भावना और कल्पना के रास्ते से भीतर प्रवेश करता है।

उत्पत्ति की कहानी हमें सिखाती है कि पाप का असली कारण फल नहीं था, बल्कि उस फल के बारे में बनाई गई सोच थी।

## 1. फल की वास्तविकता: समस्या फल में नहीं थी

अदन की वाटिका में बहुत से फल थे।

वे सभी अच्छे, स्वादिष्ट और जीवन देने वाले थे।

जिस फल को खाने से मना किया गया था, वह देखने में बाकी फलों से अधिक सुंदर या विशेष नहीं था।

परमेश्वर ने मनुष्य को किसी कमी में नहीं रखा था।

उसने उदारता से सब कुछ प्रदान किया था।

सच्चाई यह है कि समस्या फल में नहीं थी।

समस्या कहीं और थी।

## 2. झूठा मानसिक चित्र: शैतान की पहली चाल

शैतान ने फल को नहीं बदला,

उसने स्त्री की सोच को बदला।

उसने मन में एक झूठा चित्र बनाया—

कि यही फल सबसे खास है,

यही जीवन को बेहतर बना देगा।

फल वही रहा,

पर नजर बदल गई।

यही शैतान की सबसे खतरनाक चाल है—  
वह वस्तु नहीं बदलता,  
वह दृष्टिकोण बदल देता है।

### 3. परमेश्वर की भलाई से असंतोष

परमेश्वर की भलाई पर्याप्त थी,  
पर शैतान ने यह भावना डाली—

“जो तुम्हारे पास है, वह काफी नहीं है।”

जब मनुष्य परमेश्वर की दी हुई  
आशीषों को गिनना छोड़ देता है,  
तब वह उस एक चीज़ पर टिक जाता है  
जो उसके पास नहीं है।

यहीं से असंतोष जन्म लेता है।

असंतोष वह मिट्टी है,  
जिसमें पाप का बीज आसानी से उगता है।

## 4. आज का मनुष्य और वही पुरानी चाल

आज भी परमेश्वर ने मनुष्य को  
बहुत कुछ दिया है—  
जीवन, परिवार, शांति, रोज़ी, और आशीष।

पर शैतान आज भी वही करता है—  
वह ध्यान हटाता है  
और मन को कहता है:

“तुम्हारे जीवन में अभी कुछ कमी है।”

जब मनुष्य परमेश्वर की भलाई में  
आनंद करना छोड़ देता है,  
तो उसका हृदय धीरे-धीरे  
लुभावन चीज़ों की ओर खिंचने लगता है।

## 5. विवाह का उदाहरण: पराई स्त्री का भ्रम

जब कोई पुरुष अपनी पत्नी को छोड़कर  
किसी दूसरी स्त्री की ओर आकर्षित होता है,  
तो वह वास्तव में भ्रम में होता है।

वह सोचता है कि  
दूसरी स्त्री में कुछ ऐसा है  
जो उसकी पत्नी में नहीं है।

पर यह सत्य नहीं,  
यह शैतान की बनाई हुई तस्वीर है।

वास्तविकता यह है कि  
पराई स्त्री में कुछ नया नहीं होता,  
नया केवल भ्रम होता है।

## 6. शैतान का पुराना झूठ: “दूसरा विकल्प बेहतर होगा”

शैतान हमेशा यही कहता है—

“अगर दूसरा संबंध होगा,  
तो जीवन बेहतर होगा।”

पर अनुभव और वचन दोनों गवाही देते हैं—  
यह केवल छलावा है।

जो परमेश्वर देता है,  
वह पूर्ण और पर्याप्त होता है।

जो शैतान देता है,  
वह पहले आकर्षक और बाद में विनाशकारी होता है।

## 7. असली समस्या: संतोष की कमी

न फल खराब था,  
न विवाह खराब होता है।

समस्या होती है—  
मन का असंतोष।

जब हृदय संतुष्ट नहीं होता,  
तो आँखें भटकने लगती हैं।

और जब आँखें भटकती हैं,  
तो जीवन गिरने लगता है।

जहाँ संतोष है,  
वहाँ शैतान की चाल बेकार हो जाती है।

## मुख्य संदेश

शैतान मनुष्य को यह विश्वास दिलाना चाहता है कि—  
जो उसके पास है, वह कम है।  
वह परमेश्वर की भलाई को छोटा दिखाता है  
और पाप को बेहतर विकल्प के रूप में पेश करता है।  
पर यह सब केवल झूठ और धोखा है।

## आत्मिक शिक्षा

- जो परमेश्वर ने दिया है, उसमें संतोष रखें
- हर आकर्षण आशीष नहीं होता
- हर चमकती चीज़ परमेश्वर की इच्छा नहीं होती
- संतोष आत्मा की सबसे बड़ी सुरक्षा है

# शैतान का झूठ: “दूसरी शादी से खुशी मिलेगी”

शैतान मनुष्य को कभी सीधे विनाश की ओर नहीं ले जाता।

वह पहले एक आकर्षक विचार देता है—

एक ऐसा विचार जो सुनने में सही,

पर आत्मिक रूप से गलत होता है।

“दूसरी शादी से खुशी मिलेगी”—

यह ऐसा ही एक विचार है।

यह सत्य नहीं, बल्कि शैतान का गहरा धोखा है।

## 1. शैतान का बड़ा झूठ

जब कोई व्यक्ति यह सोचने लगता है—

“पहली शादी में जो खुशी नहीं मिली,

वह दूसरी शादी से मिल जाएगी।”

तो उसे समझना चाहिए कि यह सोच

परमेश्वर से नहीं,

बल्कि शैतान से आई है।

खुशी विवाह बदलने से नहीं आती।

खुशी आती है

परमेश्वर की इच्छा में चलने से।

जहाँ परमेश्वर की आज्ञा नहीं होती,

वहाँ कोई भी रिश्ता

सच्ची शांति नहीं दे सकता।

## 2. इतिहास की पहली गलती: लामेक

बाइबल में लिखा है:

“लामेक ने दो स्त्रियाँ कर लीं।”

(उत्पत्ति 4:19)

लामेक पहला व्यक्ति था

जिसने परमेश्वर की मूल योजना को तोड़ा।

परमेश्वर की योजना एक पुरुष

और एक स्त्री की थी।

लेकिन लामेक ने अपनी इच्छा चुनी।

यह परमेश्वर की अनुमति नहीं,

मनुष्य की भटकी हुई सोच का परिणाम था।

### 3. लामेक का विलाप: अंदर की टूटन

कुछ पद बाद हम लामेक को बोलते हुए सुनते हैं:

“मैं ने एक पुरुष को जो मुझे चोट लगाता था,

अर्थात् एक जवान को जो मुझे घायल

करता था, घात किया है।”

(उत्पत्ति 4:23)

यह शब्द उसकी आत्मा की हालत दिखाते हैं।

उसके पास दो पत्नियाँ थीं,

फिर भी उसके जीवन में—

- शांति नहीं थी
- संतोष नहीं था
- सुरक्षा नहीं थी

उसका जीवन डर, हिंसा

और अपराध-बोध से भरा हुआ था।

यह प्रमाण है कि

ज़्यादा पाने से दुख कम नहीं होता।

## 4. गलत समाधान, सही समस्या का इलाज नहीं

लामेक ने सोचा होगा—

“अगर एक से खुशी नहीं मिली,  
तो दो से मिल जाएगी।”

लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

उसका दुख बढ़ता गया।

उसका मन और टूटता गया।

यह हमें एक गहरी सच्चाई सिखाता है:

गलत समाधान

सही समस्या को कभी ठीक नहीं कर सकता।

## 5. असली समस्या क्या थी?

समस्या विवाह की नहीं थी।

समस्या पत्नियों की संख्या की नहीं थी।

समस्या थी—

परमेश्वर से दूरी।

जब मनुष्य परमेश्वर की इच्छा से हटता है,  
तो कोई भी विकल्प  
उसे शांति नहीं दे सकता।

चाहे वह दूसरा विवाह हो,  
दूसरा काम हो,  
या कोई दूसरा रास्ता।

## 6. आत्म-परीक्षण

यह अध्याय केवल लामेक की कहानी नहीं है।  
यह आज के हर मनुष्य के लिए प्रश्न है:

- क्या मैं किसी गलत विचार को  
“समाधान” समझ बैठा हूँ?
- क्या मैं परमेश्वर से पूछे बिना  
कोई बड़ा निर्णय लेना चाहता हूँ?
- क्या मैं शैतान के इस झूठ में आ गया हूँ  
कि “दूसरा विकल्प बेहतर होगा”?

जहाँ आत्म-परीक्षण होता है,  
वहीं से चंगाई शुरू होती है।

## 7. आशा और प्रार्थना

शैतान का झूठ अंतिम नहीं है।

उसकी पकड़ स्थायी नहीं है।

यीशु का नाम

हर बंधन से बड़ा है।

प्रार्थना:

“प्रभु यीशु के नाम में,

मैं घोषणा करता हूँ कि

शैतान का हर लुभावन धोखा

मेरे जीवन से टूट जाए।

मैं परमेश्वर की इच्छा में

संतोष और शांति पाऊँ।

आमीन।”

## मुख्य संदेश

शैतान गलत समाधान दिखाता है,  
परमेश्वर सही मार्ग दिखाता है।

परमेश्वर की इच्छा से बाहर  
कोई भी रास्ता  
सच्ची खुशी नहीं देता।

सच्ची शांति,  
सच्चा आनंद,  
और सच्ची संतुष्टि  
केवल परमेश्वर में है।

# अध्याय 3

## मनुष्य का दूसरा घातक शत्रु — शरीर (Flesh)

(रोमियों 7:18–25 पर आधारित)

### भूमिका

मनुष्य का सबसे बड़ा युद्ध बाहर नहीं,  
अंदर होता है।

कई लोग शैतान से तो सावधान रहते हैं,  
लेकिन अपने ही शरीर की शक्ति को  
कमज़ोर समझ लेते हैं।

प्रेरित पौलुस रोमियों 7 में  
एक ईमानदार आत्मिक संघर्ष को हमारे सामने रखता है—  
ऐसा संघर्ष जिसे हर सच्चा विश्वासी अनुभव करता है।

# 1. शरीर की वास्तविक स्थिति: उसमें भलाई नहीं रहती

पौलुस स्पष्ट शब्दों में कहता है:

“मेरे शरीर में कोई भली बात नहीं रहती।”

यहाँ “शरीर” से उसका मतलब  
हड्डी-मांस नहीं,  
बल्कि पापी स्वभाव है।

वह स्वीकार करता है—

- भलाई करने की इच्छा तो है
- लेकिन उसे पूरा करने की सामर्थ्य नहीं है

यह हमें सिखाता है कि  
अच्छा चाहना पर्याप्त नहीं,  
अच्छा करने की शक्ति भी चाहिए।

# 2. चाहना और करना: दो अलग दिशाएँ

पौलुस कहता है:

“जो भलाई मैं करना चाहता हूँ, वह नहीं करता...”

यह हर आत्मिक व्यक्ति की कहानी है।

मन कहता है — “सही करूँ।”

लेकिन शरीर कहता है — “आसान चुनो।”

यह संघर्ष असामान्य नहीं,

बल्कि आत्मिक जीवन का प्रमाण है।

जहाँ संघर्ष है, वहाँ जीवन है।

### 3. समस्या की जड़: भीतर रहने वाला पाप

पौलुस आगे कहता है:

“अब यह मैं नहीं, पर वह पाप है जो मुझ में रहता है।”

यह जिम्मेदारी से भागना नहीं है।

यह पहचान है कि

पाप एक भीतरी शक्ति की तरह काम करता है।

पाप केवल बाहर से नहीं आता—

वह भीतर से दबाव बनाता है।

इसलिए आत्मिक युद्ध  
हमेशा हृदय से शुरू होता है।

## 4. एक नियम जैसा अनुभव

पौलुस कहता है:

“जब मैं भलाई करना चाहता हूँ,  
तो बुराई पास रहती है।”

यहाँ “नियम” का अर्थ  
कानून नहीं,  
बल्कि बार-बार होने वाला अनुभव है।

जैसे ही कोई व्यक्ति  
सही निर्णय लेता है,  
वैसे ही विरोध शुरू हो जाता है।

अच्छे निर्णय  
हमेशा विरोध को जन्म देते हैं।

## 5. भीतर आनंद, बाहर युद्ध

पौलुस कहता है:

“भीतरी मनुष्य में  
मैं परमेश्वर की व्यवस्था से आनंदित हूँ...”

आत्मा परमेश्वर की बातों में  
आनंद लेती है।  
लेकिन शरीर एक दूसरी व्यवस्था से  
उसका विरोध करता है।

यह युद्ध—

- आत्मा बनाम शरीर
- मन बनाम वासना

के बीच चलता है।

विश्वासी के भीतर  
हमेशा दो ताकतें काम करती हैं।

## 6. कैद जैसा अनुभव

पौलुस आगे कहता है:

“मुझे पाप की व्यवस्था के अधीन  
बंदी बना लेती है।”

बार-बार गिरने से  
मनुष्य खुद को  
कैदी जैसा महसूस करता है।

वह आज़ाद होना चाहता है,  
लेकिन हर बार  
फिर फँस जाता है।

शरीर की शक्ति  
बंधनों की तरह काम करती है।

## 7. हताश नहीं, ईमानदार पुकार

अब पौलुस चिल्लाकर कहता है:

“हाय! मैं कैसा दुखी मनुष्य हूँ!”

यह हार की आवाज़ नहीं है।  
यह ईमानदार स्वीकारोक्ति है।

जब तक मनुष्य  
अपनी कमजोरी नहीं मानता,  
तब तक छुटकारा नहीं आता।

स्वीकार करना  
छुटकारे की पहली सीढ़ी है।

## 8. एकमात्र समाधान: यीशु मसीह

पौलुस अंत में कहता है:

“मैं अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा  
परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ।”

वह समाधान—

- नियमों में नहीं
- प्रयासों में नहीं
- इच्छाओं में नहीं

बल्कि यीशु मसीह में पाता है।

जो शरीर से हारता है,  
वह मसीह में जीतता है।

## 9. शरीर आत्मा पर कैसे हमला करता है

शरीर आत्मा को  
धीरे-धीरे कमजोर करता है।

गलातियों 5 हमें बताता है  
कि शरीर अपने “कामों” के द्वारा  
आत्मिक जीवन को मारता है।

ये काम अचानक नहीं,  
धीरे-धीरे असर करते हैं।

## 10. शरीर के काम (सरल समझ)

शारीरिक पाप  
— गलत संबंध, अशुद्ध जीवन

आत्मिक पाप  
— मूर्ति पूजा, टोना-टोटका

रिश्तों के पाप  
— बैर, झगड़ा, जलन, क्रोध, फूट

सामाजिक पाप

— ईर्ष्या, नशा, उन्मत्त व्यवहार

ये आत्मा के फल नहीं,

शरीर के फल हैं।

## 11. गंभीर चेतावनी

बाइबल कहती है:

“ऐसे काम करने वाले  
परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे।”

यह वचन डराने के लिए नहीं,  
जगाने के लिए है।

लगातार पाप में बने रहना  
आत्मिक मृत्यु की ओर ले जाता है।

### मुख्य संदेश

- शरीर एक वास्तविक और घातक शत्रु है
- आत्मिक युद्ध सच्चाई है
- इच्छा अकेले पर्याप्त नहीं

- विजय केवल यीशु मसीह में है

## प्रार्थना

“प्रभु यीशु,  
हम अपने शरीर की कमजोरी मानते हैं।  
अपने पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से  
हमें शरीर पर विजय दे।  
ताकि हम तेरी इच्छा में चलें।  
आमीन।”

## निष्कर्ष

जो व्यक्ति शरीर से लड़ने की कोशिश  
अपने बल से करता है,  
वह थक जाता है।  
लेकिन जो व्यक्ति  
यीशु मसीह पर भरोसा करता है,  
वह विजयी होता है।

क्योंकि मसीह में  
बंधन टूटते हैं,  
और जीवन बदलता है।

# अध्याय 4

## शरीर के काम क्यों घातक हैं?

### भूमिका

अधिकांश लोग पाप को हल्के में लेते हैं।  
वे सोचते हैं कि यह केवल एक आदत है,  
एक कमजोरी है,  
या जीवन का सामान्य हिस्सा है।

लेकिन बाइबल हमें सिखाती है कि  
पाप केवल जीवन को नुकसान नहीं पहुँचाता—  
वह आत्मा को नाश की ओर ले जाता है।

इस अध्याय में हम समझेंगे कि  
शरीर के काम इतने खतरनाक क्यों हैं  
और उनसे बचने का एकमात्र मार्ग क्या है।

# 1. शरीर के काम सबसे खतरनाक क्यों हैं

शरीर के कामों का नुकसान केवल—

- स्वास्थ्य तक सीमित नहीं
- संबंधों तक सीमित नहीं
- समाज तक सीमित नहीं

बल्कि उनका सबसे बड़ा नुकसान यह है कि  
वे मनुष्य को  
परमेश्वर के राज्य से दूर कर देते हैं।

सबसे भयानक मृत्यु  
शरीर की नहीं,  
आत्मा की होती है।

जो चीज़ आत्मा को स्वर्ग से रोक दे,  
वही सबसे बड़ा शत्रु है।

# 2. यीशु की चेतावनी: असली भय किसका हो

यीशु ने कहा:

“जो शरीर को घात करते हैं, उनसे मत डरो...  
पर उससे डरो जो आत्मा और शरीर दोनों को  
नरक में नाश कर सकता है।”

(मत्ती 10:28)

यीशु ने स्पष्ट कर दिया कि—

- शारीरिक मृत्यु अंतिम नहीं
- आत्मिक विनाश सबसे बड़ा खतरा है

मनुष्य शरीर के कष्ट से डरता है,  
पर आत्मा के नाश को नज़रअंदाज़ कर देता है।

यीशु हमें सही डर सिखाते हैं।

### 3. शरीर और उसके काम: एक धीमा ज़हर

शरीर के काम अचानक नष्ट नहीं करते।

वे धीरे-धीरे मारते हैं।

पहले—

- पाप बनते हैं

फिर—

- आदत बनते हैं

और अंत में—

- विनाश बन जाते हैं

सबसे दुखद बात यह है कि  
कई विश्वासी भी  
इन बातों के प्रति लापरवाह हो गए हैं।

जब पाप से डर खत्म हो जाता है,  
तो आत्मिक मृत्यु शुरू हो जाती है।

## 4. नीति-वचन का उदाहरण: आग पर चलना

बाइबल पूछती है:

“क्या कोई जलते अंगारों पर चले  
और उसके पैर न जलें?”

*(नीतिवचन 6:28)*

यह एक सरल लेकिन गहरी सच्चाई है।

जो व्यक्ति पाप से खेलता है,  
वह यह सोचता है—

“मैं संभाल लूँगा।”

“मुझे कुछ नहीं होगा।”

लेकिन आग का स्वभाव जलाना है,  
और पाप का स्वभाव नष्ट करना है।

पाप कभी बिना परिणाम के नहीं होता।

## 5. पराई स्त्री का उदाहरण: आत्मा का नाश

नीति-वचन आगे कहता है:

“जो अपने पड़ोसी की पत्नी के पास जाता है,  
वह निर्दोष न रहेगा...”

“व्यभिचार करने वाला  
अपनी ही आत्मा का नाश करता है।”

*(नीतिवचन 6:29, 32)*

यह केवल—

- सामाजिक गलती नहीं
- पारिवारिक समस्या नहीं

यह आत्मिक आत्महत्या के समान है।

पाप केवल नाम और सम्मान नहीं लेता,  
वह आत्मा को भी घायल करता है।

## 6. शरीर के कामों का एकमात्र समाधान

बहुत लोग सोचते हैं कि—

- शिक्षा से
- आत्म-संकल्प से
- कठोर अनुशासन से

शरीर के कामों को समाप्त किया जा सकता है।

ये बातें मदद कर सकती हैं,  
पर मुक्ति नहीं दे सकतीं।

एकमात्र सच्चा समाधान है—

यीशु मसीह।

केवल वही—

- पाप की जड़ काटते हैं
- शरीर की शक्ति को कमजोर करते हैं
- आत्मा को स्वतंत्र करते हैं

## 7. यीशु और प्रार्थना का मार्ग

यीशु ने कहा:

“फिर उसने इसके विषय में कि नित्य प्रार्थना करना और हियाव न छोड़ना चाहिए”

*(लूका 18:1)*

शरीर के विरुद्ध विजय

बिना प्रार्थना के असंभव है।

जो व्यक्ति प्रार्थना छोड़ देता है,

वह धीरे-धीरे संघर्ष हारने लगता है।

प्रार्थना आत्मा की सांस है।

## 8. विधवा और न्यायी: आत्मिक संघर्ष का चित्र

यीशु ने एक दृष्टांत सुनाया—

एक विधवा थी।

वह कमजोर थी,

पर हार मानने वाली नहीं थी।

वह बार-बार न्यायी के पास जाकर कहती थी:

“मेरे शत्रु से मेरा बदला ले।”

आत्मिक अर्थ स्पष्ट है—

- शरीर हमारा शत्रु है
- और परमेश्वर हमारा न्यायी

हमें भी बार-बार परमेश्वर के पास जाकर

छुटकारे की पुकार करनी है।

लगातार प्रार्थना

लगातार विजय लाती है।

## मुख्य संदेश

- शरीर के काम आत्मा को स्वर्ग से रोकते हैं
- आत्मिक लापरवाही अत्यंत खतरनाक है
- पाप से खेलना आग से खेलने जैसा है
- केवल यीशु मसीह सच्चा छुटकारा है
- निरंतर प्रार्थना ही विजय की कुंजी है

## प्रार्थना

“प्रभु यीशु,  
हम मानते हैं कि शरीर के काम  
हमारे लिए घातक हैं।  
अपनी सामर्थ्य से  
हमारे जीवन से हर पाप को हटाकर,  
हमें स्वर्ग के मार्ग पर स्थिर रख।  
आमीन।”

## निष्कर्ष

शरीर का काम

छोटा विषय नहीं है।

यह स्वर्ग और नरक का प्रश्न है।

जो व्यक्ति आज सावधान होता है,

वह अनंतकाल में सुरक्षित होता है।

और जो यीशु में स्थिर रहता है,

वह हर आत्मिक खतरे से

विजयी होकर निकलता है।

# अध्याय 5

## शिष्यत्व का स्कूल

### अपने शत्रु को जानो

#### प्रस्तावना: क्यों ज़रूरी है शत्रु को जानना

परमेश्वर के राज्य में शिष्यत्व केवल प्रार्थना, उपवास या सेवा तक सीमित नहीं है।

शिष्यत्व एक आत्मिक प्रशिक्षण स्कूल है, जहाँ हर शिष्य को जीवन के युद्धों के लिए तैयार किया जाता है।

इस स्कूल में तीन मुख्य मॉड्यूल होते हैं।

उनमें से एक अत्यंत महत्वपूर्ण और अनदेखा किया गया विषय है —

“अपने शत्रु को पहचानो।”

क्योंकि एक बहुत गहरी सच्चाई यह है कि

जब तक आप अपने शत्रु को नहीं जानते, तब तक आप उससे बच नहीं सकते।

अज्ञान आत्मिक जीवन में सबसे बड़ा खतरा है।

## पहचान और सुरक्षा का संबंध

कहावत है

“शत्रु का रहस्य खुलते ही, उसकी मार समाप्त हो जाती है।”

इस कहावत में एक महान आत्मिक सिद्धांत छुपा है।

पहचान सुरक्षा लाती है,  
और अज्ञान विनाश।

जैसे ही किसी व्यक्ति को यह स्पष्ट हो जाता है कि उसका शत्रु कौन है,  
उसका व्यवहार बदल जाता है,  
उसकी सतर्कता बढ़ जाती है,  
और उसकी भोलेपन की आँखें खुल जाती हैं।

## शत्रु की पहचान से व्यवहार बदल जाता है

जिस व्यक्ति को आप मित्र समझते हैं,  
उससे आप निश्चिंत होकर बात करते हैं।

लेकिन जिस व्यक्ति को आप शत्रु पहचान लेते हैं,  
उससे आप —

लापरवाही से बात नहीं करते,  
आँख मूँदकर भरोसा नहीं करते,  
और भावुक होकर निर्णय नहीं लेते।

यह कोई कठोरता नहीं,  
यह आत्मिक बुद्धिमानी है।

## दाऊद और सुलैमान: शत्रु पहचानने की विरासत

पहला राजा अध्याय 2 हमें एक बहुत महत्वपूर्ण दृश्य दिखाता है।

राजा दाऊद मृत्यु के निकट है।

वह अपने पुत्र सुलैमान को बुलाता है।

यह केवल पिता-पुत्र की भावुक बातचीत नहीं है,

यह एक राजा द्वारा दूसरे राजा को दिया गया आत्मिक वारिसाना ज्ञान है।

दाऊद अपने जीवन के शत्रुओं की पहचान सुलैमान को कराता है।

विशेष रूप से वह योआब का नाम लेता है।

योआब ने शांति के समय युद्ध का खून बहाया था।

उसने निर्दोष लोगों की हत्या की थी।

दाऊद सुलैमान से कहता है:

“तू बुद्धि से काम लेना,

उसे शांति से मरने न देना।”

यहाँ दाऊद भावुक नहीं है।  
वह न्यायप्रिय और बुद्धिमान है।  
शत्रु से भावनाओं से नहीं,  
बुद्धि से निपटना चाहिए।

## शत्रुओं के दो प्रकार

बाइबल हमें सिखाती है कि शत्रु केवल एक प्रकार के नहीं होते।  
मुख्यतः वे दो प्रकार के होते हैं:

1. आंतरिक शत्रु
2. बाहरी शत्रु

इन दोनों में सबसे खतरनाक कौन है —  
यह जानना अत्यंत आवश्यक है।

## सबसे खतरनाक शत्रु: आंतरिक

बाहरी शत्रु तभी आपको नुकसान पहुँचा सकता है,  
जब आंतरिक शत्रु उसे अंदर आने का रास्ता देता है।  
यदि अंदर का दरवाज़ा बंद है,  
तो बाहर खड़ा शत्रु शक्तिहीन है।

आंतरिक शत्रु कौन हैं?

पाप,

लालच,

भय,

असंयमित इच्छाएँ,

शरीर की कमजोरी।

इसीलिए आंतरिक शत्रु सबसे घातक होता है,

क्योंकि वह भीतर से वार करता है।

## बाहरी शत्रु: गोलियत का उदाहरण

गोलियत दाऊद का बाहरी शत्रु था।

वह विशाल था, डरावना था, और अनुभव में बड़ा था।

फिर भी दाऊद ने उसे पराजित किया।

क्यों?

क्योंकि दाऊद के भीतर कोई आंतरिक शत्रु शासन नहीं कर रहा था।

उसका मन परमेश्वर में स्थिर था।

जब भीतर सामर्थ्य होती है,

तो बाहर का शत्रु टिक नहीं पाता।

## शत्रु के साथ नरमी — आत्मिक आत्महत्या

एक कठोर लेकिन सत्य सिद्धांत यह है:

“यदि तुमने शत्रु को नहीं मारा,  
तो वह तुम्हें मारेगा।”

आत्मिक युद्ध में  
समझौता नहीं चलता।

यहाँ आधे निर्णय,  
आधे समर्पण,  
या भावनात्मक दया  
विनाश लाती है।

## “अपने पड़ोसी से प्रेम” का संतुलित अर्थ

परमेश्वर हमें अपने पड़ोसी से प्रेम करना सिखाता है।  
लेकिन यह प्रेम आत्म-विनाश नहीं है।

परमेश्वर कभी नहीं चाहता कि  
आप किसी और को बचाने के नाम पर  
खुद को नष्ट कर लें।

पहले अपनी सुरक्षा,  
फिर दूसरों की चिंता।

## पहले स्वयं सुरक्षित होना क्यों ज़रूरी है

एक सरल आत्मिक सिद्धांत है:

Self-preservation before extension

(पहले स्वयं की रक्षा, फिर विस्तार)

जो स्वयं घायल है,  
वह किसी और को चंगा नहीं कर सकता।

## विधवा और उसका शत्रु (लूका 18)

लूका 18 में एक विधवा न्यायी से कहती है:

“मेरे शत्रु से मेरा बदला ले।”

यह प्रार्थना एक महत्वपूर्ण सच्चाई दिखाती है।

वह विधवा अपने शत्रु को पहचानती थी।

वह शत्रु उसके लिए कोई अजनबी नहीं था।

आप उस शत्रु के विरुद्ध प्रार्थना नहीं कर सकते,  
जिसे आप पहचानते ही नहीं।

## निष्कर्ष: मुख्य आत्मिक सत्य

अपने शत्रु को पहचानना  
जीवन और सुरक्षा की कुंजी है।

आंतरिक शत्रु सबसे खतरनाक होता है।  
बाहरी शत्रु तभी सफल होता है जब भीतर से रास्ता मिले।  
शत्रु के साथ नरमी आत्मिक विनाश है।  
पहले स्वयं सुरक्षित होना आवश्यक है।

## प्रार्थना

“हे प्रभु,  
मेरी आँखें खोल कि मैं अपने शत्रुओं को पहचान सकूँ।  
मुझे बुद्धि दे कि मैं उनसे सही रीति से निपट सकूँ।  
मुझे भीतर से शुद्ध और मजबूत बना।  
यीशु के नाम में, आमीन।”

# अध्याय 6

## शत्रु की पहचान और प्रार्थना का महत्व

### प्रस्तावना: शत्रु से लड़ाई की तैयारी

हर शिष्य को यह समझना आवश्यक है कि शत्रु केवल बाहर नहीं होता, बल्कि भीतर भी काम करता है।

शत्रु को जानना और उसके खिलाफ प्रार्थना करना आत्मिक जीवन की पहली लड़ाई है।

इस अध्याय में हम सीखेंगे कि कैसे पुराने शत्रु को पहचानें, अपने व्यक्तिगत शत्रु से निपटें, और प्रार्थना के माध्यम से विजय पाएं।

### शत्रु पहले से जाना हुआ था

विधवा ने कहा:

“मेरा शत्रु।”

यह बताता है कि यह शत्रु नया नहीं था। वह पहले से परिचित था।

सीख:

पुराने शत्रु को पहचानना आवश्यक है।

जब आप शत्रु की पहचान कर लेते हैं, तभी आप सही दिशा में प्रार्थना कर सकते हैं।

## शत्रु ने पहले अपमान किया था

विधवा ने उस शत्रु से पहले कष्ट और अन्याय झेला था।

शत्रु जानता है आपकी कमजोरी और बार-बार उसी जगह निशाना बनाता है।

सीख:

जहाँ पहले चोट लगी है, वहाँ सतर्क रहना ज़रूरी है।

## शत्रु व्यक्तिगत था

जब विधवा कहती है मुद्दई: “मेरा शत्रु”, इसका अर्थ है कि यह शत्रु व्यक्तिगत रूप से हानि पहुँचाता था।

कुछ लोग दूसरों के शत्रु से लड़ते हैं लेकिन अपने व्यक्तिगत शत्रु को अनदेखा कर देते हैं।

सीख:

पहले अपने व्यक्तिगत शत्रु का सामना करना आवश्यक है।

## पादरी की भूमिका

विधवा पादरी के पास गई, क्योंकि न्यायी अपने बुलाहट और परमेश्वर की शक्ति से शत्रुओं से लड़ सकते हैं।

सीख:

कभी-कभी हमें अपनी शक्ति से परे मदद की आवश्यकता होती है।

## विधवा का न्यायी के पास जाना

यह दिखाता है कि विधवा अपने दम पर लड़ नहीं सकती थी।

उसे चाहिए था परमेश्वर से ऊपर शक्ति, जो उसके लिए लड़ सके।

सीख:

जब हम कमजोर हों, हमें परमेश्वर से मदद माँगनी चाहिए।

## दाऊद और भजन 35 का उदाहरण

दाऊद ने लिखा कि शत्रुओं से लड़ने के लिए भजन और प्रार्थना महत्वपूर्ण हैं।

हम भी प्रार्थना करें कि परमेश्वर हमारे भाग्य को नष्ट करने वाले शत्रुओं से लड़ें।

## शत्रु की पहचान और प्रार्थना

शत्रुओं को पहचानना और प्रार्थना के माध्यम से उनसे लड़ना आत्मिक जीवन की आवश्यकता है।

अपने शत्रुओं के लिए परमेश्वर से मदद माँगें।

## आंतरिक शत्रु सबसे खतरनाक

बाहरी शत्रु से अधिक आंतरिक शत्रु खतरनाक और शक्तिशाली होता है। यह आपकी कमजोरियाँ, लालच, भय और पापी प्रवृत्तियाँ हैं।

सीख:

आंतरिक शत्रु को पहचानना और उनसे लड़ने के लिए परमेश्वर पर भरोसा करना ज़रूरी है।

## मुख्य संदेश (Summary)

1. पुराने और व्यक्तिगत शत्रु को पहचानना महत्वपूर्ण है।
2. शत्रु आपकी कमजोरी को निशाना बनाता है।
3. पहले अपने व्यक्तिगत शत्रु से निपटो।
4. जब आप कमजोर हों, परमेश्वर से मदद माँगो।
5. प्रार्थना और परमेश्वर पर भरोसा आंतरिक और बाहरी शत्रुओं से सुरक्षा देता है।

## प्रार्थना

“हे प्रभु,

मुझे मेरे शत्रुओं की पहचान करने की शक्ति दे,

और मेरे लिए लड़।

मेरी आंतरिक और बाहरी दुश्मनों को मेरी ज़िंदगी से दूर कर,

ताकि मेरा भाग्य और मेरे लक्ष्य सुरक्षित रहें।

यीशु के नाम में, आमीन।”

# अध्याय 7

## आंतरिक शत्रु – पौलुस और मूसा के उदाहरण

### प्रस्तावना: आत्मिक युद्ध की पहली लड़ाई

हर शिष्य के जीवन में दो शत्रु होते हैं: बाहरी शत्रु और आंतरिक शत्रु।  
आंतरिक शत्रु वह है जो हमारे भीतर से हमारे अच्छे कामों को रोकता है, हमारी इच्छाओं और हमारी भावनाओं को नियंत्रित करता है।  
इस अध्याय में हम पौलुस और मूसा के उदाहरण से सीखेंगे कि आंतरिक शत्रु की पहचान कैसे करें और उससे कैसे लड़ें।

### पौलुस ने अपने आंतरिक शत्रु को पहचाना

रोमियों 7:24

“हे प्रभु, कौन मुझे इस मृत्यु के शरीर से छुड़ाएगा?”

पौलुस ने स्पष्ट रूप से समझ लिया कि उसका सबसे बड़ा शत्रु उसका शरीर (flesh) है।

इस शरीर में रहने वाला पाप उसकी भलाई करने की क्षमता को रोक रहा था।

सीख:

आत्मिक युद्ध का पहला कदम है – अपने आंतरिक शत्रु की पहचान।

## आंतरिक शत्रु का काम

रोमियों 7:21

“जब मैं भलाई करना चाहता हूँ, बुराई मेरे साथ रहती है।”

आंतरिक शत्रु केवल इच्छा को रोकता नहीं, बल्कि हमारे कार्यों में भी हस्तक्षेप करता है।

यह हमारे अच्छे निर्णयों और भले कामों को बाधित करता है।

## मूसा का उदाहरण – क्रोध का शत्रु

मूसा ने मिस्र में देखा कि एक यहूदी और एक मिस्री लड़ रहे थे।

उसने क्रोध के कारण मिस्री को मार दिया।

यद्यपि उसकी योजना अपने भाई की रक्षा की थी, क्रोध ने उसे नियंत्रण से बाहर कर दिया।

सीख:

क्रोध, लालच और अन्य आंतरिक कमजोरी शत्रु के लिए प्रवेश द्वार बन जाती हैं।

## कमजोरी का फायदा उठाना – शत्रु की चाल

जब शत्रु आपकी कमजोरी जान लेता है, वह बार-बार उसी जगह हमला करता है।

उदाहरण:

- यदि आपकी कमजोरी यौन इच्छाएँ हैं, तो शत्रु मोहक महिलाएँ और खेल-तमाशे भेजकर फँसाने की कोशिश करेगा।

सीख:

कमजोरी को पहचानो और उसे परमेश्वर के हाथों सौंपो।

## मूसा की शिकायत – लोगों का बोझ

गिनती 11:10–15

लोग हर दिन रोते और मूसा पर अपने दुःख का बोझ डालते थे।

मूसा कहता है:

“मैं अकेला इन सब लोगों का भार नहीं सम्भाल सकता, क्योंकि यह मेरी शक्ति के बाहर है।”

मूसा ने स्वीकार किया कि वह अकेले इस बोझ को संभाल नहीं सकता।

## आंतरिक शत्रु और बोझ

आंतरिक शत्रु हमें कमजोर बनाता है।

जब हम कमजोर और बोझ तले दबे होते हैं, तो बाहरी शत्रु आसानी से हमला कर सकता है।

सीख:

आंतरिक कमजोरी की पहचान और प्रार्थना आवश्यक है।

## मुख्य संदेश (Summary)

1. पहला कदम – अपने आंतरिक शत्रु को पहचानो।
2. शरीर (flesh) में रहने वाला पाप अच्छे कामों में बाधा डालता है।
3. आंतरिक कमजोरी जैसे क्रोध, लालच या यौन इच्छाएँ शत्रु के लिए प्रवेश द्वार हैं।
4. शत्रु बार-बार उसी कमजोरी का फायदा उठाता है।
5. बोझ और कमजोरी को अकेले संभालने की कोशिश मत करो – परमेश्वर पर भरोसा रखो।

## प्रार्थना

“हे प्रभु, मुझे मेरे आंतरिक शत्रु की पहचान करने की शक्ति दे।  
मेरी कमजोरी को दूर कर, मुझे स्वर्गीय विजय के लिए सक्षम बना।  
यीशु के नाम में, आमीन।”

# अध्याय 8

## आंतरिक शत्रु और आत्मिक जीवन

### प्रस्तावना: अंदर का सबसे खतरनाक शत्रु

हमारे जीवन में सबसे खतरनाक शत्रु वह है जो हमारे भीतर छिपा होता है। यह शत्रु हमारी इच्छाओं, भावनाओं और कमजोरियों के माध्यम से हमें परमेश्वर से दूर ले जाता है।

इस अध्याय में हम देखेंगे कि कैसे आंतरिक शत्रु हमारी आत्मिक यात्रा को प्रभावित करता है और परमेश्वर की मदद से हम उस पर विजय पा सकते हैं।

### मूसा का आंतरिक शत्रु – क्रोध

- ◆ शैतान ने देखा कि क्रोध मूसा की सबसे बड़ी कमजोरी थी।
- ◆ इसलिए उसने इस्राएल के बच्चों के माध्यम से मूसा को बार-बार परेशान किया।
- ◆ अंत में मूसा ने कहा:

“हे प्रभु, मुझे मार दे।”

- ◆ यदि परमेश्वर कृपाशील न होते, तो मूसा का कार्य वहीं समाप्त हो जाता।

सीख:

आंतरिक कमजोरी को पहचानना और उसे प्रभु के सामने रखना ज़रूरी है।

## **अपनी कमजोरी पहचानना = आंतरिक शत्रु को पहचानना**

- ◆ प्रत्येक व्यक्ति की जीवन में एक मुख्य कमजोरी होती है।
- ◆ वही कमजोरी आपका आंतरिक शत्रु है।

उदाहरण:

- जेम्स और जॉन का आंतरिक शत्रु था गर्मी वाला स्वभाव (fiery temper)।

## **याकूब और यूहन्ना – “संसद के पुत्र”**

मार्क 3:17

और जब्दी का पुत्र याकूब और याकूब का भाई यूहन्ना, जिनका नाम उसने बुअनरगिस अर्थात् ‘गर्जन के पुत्र’ रखा”

- ◆ इसका कारण उनका गर्मी वाला क्रोध और impulsive स्वभाव था।

## क्रोध का उदाहरण – सामरी गांव

लूका 9:51–56

- ◆ यीशु जेरूसलेम जा रहे थे।
- ◆ सामरी गांव ने उन्हें स्वीकार नहीं किया।
- ◆ जेम्स और जॉन ने कहा:

“हे प्रभु, क्या हम उन्हें आग से नष्ट कर दें, जैसे एलियाह ने किया?”

- ◆ यीशु ने उन्हें टोका:

“तुम नहीं जानते कि तुम किस आत्मा से हो। मैं लोगों को नष्ट करने नहीं आया, बल्कि उन्हें बचाने आया हूँ।”

सीख:

आंतरिक शत्रु क्रोध के कारण गर्मी वाला impulsive निर्णय ले सकता है।

## आंतरिक शत्रु – प्रेम की कमजोरी

- ◆ सैमसन का आंतरिक शत्रु था महिलाओं के प्रति प्रेम।
- ◆ यह शत्रु फ़िलिस्तिनों से भी ज्यादा शक्तिशाली था।
- ◆ जो फ़िलिस्ती सैमसन को नहीं हरा पाए, वही महिलाओं का प्यार कर गया।

सीख:

आंतरिक शत्रु बाहरी शत्रु से भी खतरनाक हो सकता है।

## आंतरिक शत्रु की पहचान और प्रार्थना

- ◆ आंतरिक शत्रु की पहचान करने के बाद हमें परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए।
- ◆ परमेश्वर ही हमें आंतरिक शत्रु से निपटने की शक्ति देता है।

सूत्र:

पहचान + प्रार्थना = आंतरिक विजय

## मुख्य संदेश (Summary)

1. आंतरिक शत्रु आपकी सबसे बड़ी कमजोरी है।
2. मूसा – क्रोध, जेम्स और जॉन – गुस्सा, सैमसन – महिलाओं के प्रति प्रेम।
3. आंतरिक शत्रु बाहरी शत्रु से अधिक शक्तिशाली हो सकता है।
4. पहचान और प्रार्थना के माध्यम से आंतरिक विजय संभव है।
5. परमेश्वर की कृपा से आप अपने आंतरिक शत्रु पर विजय पा सकते हैं।

## प्रार्थना

“हे प्रभु, मुझे मेरे आंतरिक शत्रु की पहचान करने की शक्ति दे।  
मुझे उस पर विजय पाने की कृपा दे, ताकि मैं अपने जीवन में स्थिर और  
सुरक्षित रहूँ।  
यीशु के नाम में, आमीन।”

# अध्याय 9

## परम उच्च और उसका संरक्षण

### प्रस्तावना: सबसे ऊपर कौन है?

हमारे जीवन में संकट और शत्रु हमेशा मौजूद रहते हैं।

लेकिन बाइबिल हमें एक सबसे शक्तिशाली स्थान और एक सबसे उच्च सत्ता के बारे में बताती है।

इस अध्याय में हम समझेंगे कि “The Most High” कौन हैं और उसका गोपनीय स्थान हमारे लिए क्यों महत्वपूर्ण है।

### “The Most High” कौन हैं?

Psalm 91:1

“जो परमप्रधान के छाए हुए स्थान

में बैठा रहे,

वह सर्वशक्तिमान की छाया में ठिकाना पाएगा।”

- ◆ “The Most High” का अर्थ है – सबसे ऊपर, सबसे शक्तिशाली, हर किसी से ऊँचा।
- ◆ कोई भी उसके ऊपर नहीं है।

सन्दर्भ: Ecclesiastes 5:8

“जो सबसे ऊपर है, वह देखता है; और उनके ऊपर भी कोई नहीं।”

सीख:

सबसे शक्तिशाली सत्ता की सुरक्षा में रहना ही असली विजय है।

## “The Most High” का नाम

- ◆ बाइबिल में कहा गया है कि “The Most High” का नाम यीशु है।

Philippians 2:9

“परमेश्वर ने उन्हें सब नामों से ऊपर एक नाम दिया।”

- ◆ इसका अर्थ: यीशु का नाम सबसे बड़ा, सबसे शक्तिशाली और सबसे सुरक्षित है।

सीख:

जो यीशु के नाम में विश्वास करता है, वह हमेशा सुरक्षित रहता है।

## विजय का पहला तत्व – गोपनीय स्थान

- ◆ परम उच्च का गोपनीय स्थान वह जगह है जहाँ संकट के समय वह अपने लोगों को सुरक्षित रखता है।
- ◆ यह कोई इमारत या भौतिक जगह नहीं, बल्कि उसका नाम और उस पर भरोसा है।

Proverbs 18:10

“यहोवा का नाम दृढ़ गढ़ है,  
धर्मी उसमें भागकर सब दुर्घटनाओं से  
बचता है।”

सीख:

जीवन के संकट में सबसे बड़ा संरक्षण यीशु का नाम और उस पर भरोसा है।

**गोपनीय स्थान = परमेश्वर का नाम**

- ◆ “Secret Place” का मतलब है:
  - सुरक्षित जगह
  - संकट और शत्रुओं से छिपने की शक्ति
  - यीशु के नाम में भरोसा करना

- ◆ यह स्थान केवल आध्यात्मिक शक्ति के माध्यम से अनुभव किया जा सकता है।

## मुख्य संदेश (Summary)

1. परम उच्च – सबसे ऊपर और सबसे शक्तिशाली।
2. उसका नाम यीशु है, जो सब नामों से ऊपर है।
3. संकट के समय विजय का रहस्य: “परम उच्च के गोपनीय स्थान में निवास”।
4. गोपनीय स्थान का अर्थ: यीशु का नाम और उस पर भरोसा।
5. परमेश्वर का नाम = मजबूत टॉवर, जहाँ धर्मी सुरक्षित रहते हैं।

### प्रार्थना

“हे प्रभु यीशु,  
मुझे तेरे गोपनीय स्थान में रहने की शक्ति दे।  
मेरे शत्रुओं से रक्षा कर और मुझे हमेशा सुरक्षित रख।  
यीशु के नाम में, आमीन।”

# अध्याय 10

## यीशु का नाम और सर्वशक्तिमान परमेश्वर

### प्रस्तावना: संकट में सुरक्षा का रहस्य

हमारे जीवन में शत्रु, कठिनाइयाँ और संकट हमेशा मौजूद रहते हैं।  
लेकिन बाइबल हमें यह सिखाती है कि यीशु का नाम और सर्वशक्तिमान परमेश्वर की छाया में रहने से हम हर संकट में सुरक्षित रह सकते हैं और विजय प्राप्त कर सकते हैं।

### यीशु का नाम – हमारा गोपनीय स्थान

Philippians 2:10

“यीशु के नाम पर हर घुटना झुकाएगा – आकाश में, पृथ्वी पर, और धरती के नीचे की सारी चीज़ें।”

- ◆ इसका अर्थ है:
- संकट में यीशु के नाम में विश्वास करना ही सबसे बड़ा सुरक्षा कवच है।

- हर शक्ति और शत्रु यीशु के नाम के सामने अधीन है।

सीख:

यीशु का नाम ही हमारा आध्यात्मिक गोपनीय स्थान और सुरक्षा है।

## सर्वशक्तिमान (The Almighty) कौन हैं?

- ◆ बाइबल में परमेश्वर को “The Almighty” भी कहा गया है।
- ◆ इसका कारण यह है कि उनके लिए कोई भी कार्य असंभव नहीं है।

Luke 1:37

“परमेश्वर के साथ कुछ भी असंभव नहीं।”

सीख:

जो सर्वशक्तिमान के संरक्षण में है, उसे कोई भी संकट हरा नहीं सकता।

## सर्वशक्तिमान की शक्ति का स्रोत

Psalms 62:11

“शक्ति परमेश्वर की ही है।”

- ◆ वास्तविक शक्ति सिर्फ परमेश्वर के पास है।
- ◆ वही असंभव को संभव कर सकते हैं।

सीख:

मानव की अपनी शक्ति सीमित है; सफलता और विजय परमेश्वर की शक्ति में है।

## सर्वशक्तिमान की छाया में कैसे आएँ?

- ◆ इसका सरल उत्तर है: नया जन्म (Born-again) होना।
- ◆ यह तब संभव है जब आप:

1. यीशु मसीह की कुर्बानी और काम को स्वीकार करें।
2. अपने पापों का त्याग और सच्चे मन से पश्चाताप करें।
3. विश्वास के साथ परमेश्वर में जीवन जीना शुरू करें।

सीख:

नया जन्म ही वह आध्यात्मिक द्वार है जो हमें सर्वशक्तिमान की छाया में ले जाता है।

## जन्मा हुआ व्यक्ति = विजेता

1 John 5:4-5

“4क्योंकि जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह संसार पर जय प्राप्त करता है; और वह विजय जिस से संसार पर जय प्राप्त होती है हमारा विश्वास है।

5संसार पर जय पानेवाला कौन है? केवल वह जिसका यह विश्वास है कि यीशु, परमेश्वर का पुत्र है।”

- ◆ केवल विश्वासी और परमेश्वर से जन्मे लोग वास्तविक विजय प्राप्त करते हैं।

सीख:

विश्वास और परमेश्वर की संतान होने से ही संकटों पर विजय संभव है।

## विजय आपके हाथ में

- ◆ जब आप यीशु के नाम में विश्वास करते हैं और परमेश्वर से जन्मे होते हैं, तो सभी शत्रु और समस्याएँ आपके सामने असफल हो जाती हैं।

सीख:

यीशु का नाम और पुनर्जन्म = संकट पर विजय।

## मुख्य संदेश (Summary)

1. यीशु का नाम = गोपनीय और सुरक्षित स्थान।
2. सर्वशक्तिमान परमेश्वर असंभव को संभव कर सकते हैं।
3. वास्तविक शक्ति केवल परमेश्वर के पास है।
4. छाया में आने का तरीका: पुनर्जन्म और पापों का त्याग।
5. विश्वासियों के लिए विजय सुनिश्चित है।
6. केवल विश्वास और परमेश्वर के पुत्र होने से ही आप विजयी बन सकते हैं।

## प्रार्थना

“हे प्रभु यीशु,

मुझे तेरे नाम की छाया में सुरक्षित रख।

मेरे शत्रु और कठिनाइयाँ तेरे नाम के सामने असफल हों।

मुझे विश्वास और पुनर्जन्म की शक्ति दे, ताकि मैं संसार पर विजय पा सकूँ।

यीशु के नाम में, आमीन।”

## समापन शब्द

प्रिय पाठक,

इस पुस्तक के अंत तक पहुँचते-पहुँचते आप यह स्पष्ट रूप से समझ चुके होंगे कि जीवन की सबसे बड़ी लड़ाई बाहर नहीं, **अंदर** लड़ी जाती है। हमारा असली शत्रु कई बार परिस्थितियाँ, लोग या समस्याएँ नहीं होतीं, बल्कि **हमारी आंतरिक कमजोरियाँ** होती हैं—क्रोध, भय, लालच, वासना, अविश्वास और अधैर्य।

परमेश्वर ने हमें इस युद्ध में अकेला नहीं छोड़ा है। उसने हमें एक सुरक्षित स्थान दिया है—  
**“परम उच्च का गोपनीय स्थान”**,  
और वह स्थान है **यीशु मसीह का नाम**।

जब हम यीशु के नाम में रहते हैं,  
जब हम सर्वशक्तिमान परमेश्वर की छाया के नीचे आते हैं,  
तो कोई भी शत्रु—चाहे वह आंतरिक हो या बाहरी—हम पर अधिकार नहीं जमा सकता।

इस पुस्तक का उद्देश्य आपको डराना नहीं, बल्कि **जगाना** है—  
कि आप अपनी कमजोरी को पहचानें,  
प्रभु के सामने झुकें,  
और विश्वास के साथ विजयी जीवन जिँएँ।

याद रखिए:

- पहचान बिना विजय नहीं।
- प्रार्थना बिना शक्ति नहीं।

- और यीशु के नाम के बिना सुरक्षा नहीं।

मैं प्रार्थना करता हूँ कि यह पुस्तक आपके लिए केवल पढ़ने की सामग्री न रहे, बल्कि आपके जीवन में **परिवर्तन, स्थिरता और विजय** लेकर आए।

अब यह जिम्मेदारी आपके हाथों में है—

**परम उच्च के गोपनीय स्थान में निवास करें,**  
और सर्वशक्तिमान की छाया में चलें।

परमेश्वर आपको आशीष दे,  
और आपका जीवन दूसरों के लिए गवाही बने।

**आमीन।**

**– Pastor Mojesh**

**Divine Power Path**